10 तालाबों की नगर

एक बार राजा भोज को कुष्ठ रोग हो गया था। वैद्य, हकीमों की दवाईयों से भी जब उनकी बीमारी दूर नहीं, हुई तब एक संत महात्मा ने उन्हें कहा कि यदि वे भारत की सबसे बड़ी झील का निर्माण करवाकर उसमें स्नान करेंगे तो वे रोगमुक्त हो जाएंगे। राजा भोज ने आनन फानन में करीब 3000 हेक्टेयर के विशाल भू-भाग पर इस झील का निर्माण करवाया। अब यह तो नहीं पता कि वे इस झील में स्नान कर वे रोग मुक्त हुए अथवा नहीं, लेकिन आज भी यह झील भोपाल के सौन्दर्य को बनाने और बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है।

भोपाल शहर अपने विशाल आकार, अनुपम प्राकृतिक सौन्दर्य, बनावट, हरियाली और बसाहट के लिए देश भर में विशिष्ट स्थान रखता है । लेकिन इसके सौन्दर्य में चार चांद लगाते हैं भोपाल के तालाब । राजधानी में एक-दो नहीं बल्कि दस-दस तालाब अपनी सौन्दर्य की छटा बिखेरते हैं, और यहां के बांशिदों को जोडते हैं प्रकृति से, तभी तो भोपाल को झीलों की नगरी के नाम से भी जाना जाता है। ये दस तालाब वे हैं जिनकी व्यवस्था नगर निगम भोपाल द्वारा की जाती है अन्यथा शहर के तालाब पोखरों की संख्या इनसे कहीं ज्यादा है ।

एशिया की सबसे बडी झील कहा जाने वाला भोपाल का बड़ा तालाब । जिसके बारे में कहावत भी मशहूर हैं ''ताल तो ताल

करवाया था, इसलिए इसे नाम दिया गया छोटा तालाब। करीब 129 हेक्टेयर के भूभाग में फैला है छोटा तालाब। इसके एक ओर रानी कमलापती का महल है और आसपास के क्षेत्र में है कमला पार्क और किलोल पार्क। यह तालाब पुराने शहर के कई क्षेत्रों से होकर गुजरता । समय-समय पर ये दोनों ही तालाब अव्यवस्था का शिकार होकर अपना मौलिक स्वरूप खोते रहे हैं । मानवीय हस्तक्षेप के चलते गन्दगी, प्रदूषण के कारण इनका क्षेत्र सिकुड़ता चला गया । लेकिन केन्द्र और राज्य सरकार द्वारा ढेरों योजनाएं बनाकर इन तालाबों की खूबसूरती बरकरार रखने की पहल की गई, जिसमें नगर की जनता ने भी बढ चढकर हिस्सा लिया । इनकी सफाई कार्य लगातार

शिकार होता रहा । कुछ ऐसा ही हश्र हुआ सिद्धीकहसन तालाब का । मोतिया तालाब और मुन्शी हुसैन तालाब के बीच स्थित होने के कारण इसे बीच का तालाब भी कहा जाता है । मोतिया तालाब के अतिरिक्त जल की निकासी के लिए इस तालाब का निर्माण शाहजहाँ बेगम के दूसरे पति नवाब सिद्दीकहसन ने करवाया था । जिसका क्षेत्र 1.0 हेक्टेयर है । कभी इसके साफ सुथरे पानी में कमल खिला करते थे, लेकिन धीरे-धीरे लोगों ने इस तालाब पर ही अतिक्रमण कर लिया और यहाँ दुकानें और मकानों का निर्माण शुरू कर दिया । बीच के तालाब के दूसरी ओर स्थित है । मुन्शी हुसैन खाँ तालाब इस तालाब को भी नवाबी शासन के दौरान

शामिल हो गए नगर में । शाहपुरा झील भी इसी तरह आ गई शहर की सीमा में । 96 हेक्टेयर के भूभाग में निर्मित यह झील शाहुपरा गांव के अन्तर्गत आती थी, इसलिए इसका नाम पड़ा शाहपुरा झील । 1974-75 के करीब बनी इस झील में आसपास के नालों का पानी आकर मिलता है । मछली-पालन का काम भी यहाँ किया जाता है । झील के आसपास राजधानी परियोजना ने खूबसूरत बगीचा निर्मित कर दिया है । निश्चित ही यह झील नए भोपाल की खूबसूरती में इजाफा करती है । इसी प्रकार चार इमली क्षेत्र में 1.2 हेक्टेयर पर बनी झील भी आते-जाते लोगों का ध्यान खींचती है । झील में खिले कमल के खूबसूरत फूल भी इसका सौन्दर्य बढ़ाते हैं । इस झील में भी आसपास का वर्षा जल व नालों का पानी एकत्रित होता है । इस झील के आसपास की राजधानी परियोजना द्वारा